

Mr.Sanjay Kumar
(Assistant Professor)
Dept.Of Psychology
C.M.J. College, Donwarihat
Khutauna,Madhubani
9905430675(Mobile/WhatsApp)
Email- sanjayuttam725@gmail.com

B.A. PART -I. PAPER-I

सीखना या अधिगम:अभिप्रेरण की भूमिका (LEARNING: ROLE OF MOTIVATION)

सीखना या अधिगम(learning) :-मनोविज्ञान के अंतर्गत 'सीखना' का तात्पर्य व्यक्ति के व्यवहार में वैसे स्थाई परिवर्तन से है, जो उसके अभ्यास(practice) या अनुभूति(experience) के फलस्वरूप होता है तथा सीखना का मुख्य उद्देश्य व्यक्ति को अपने वातावरण के साथ समायोजन करने में मदद करना होता है। सामान्य अर्थ में 'सीखना' व्यवहार में परिवर्तन(learning refers to change in behaviour) को कहा जाता है। परंतु सभी तरह के व्यवहार में हुए परिवर्तन को सीखना नहीं कहा जा सकता क्योंकि व्यवहारों में परिवर्तन कुछ अन्य कारकों जैसे- थकान, औषधि लेने, बीमारी, इत्यादि से भी होता है। व्यवहार में इन कारकों से उत्पन्न हुए ये परिवर्तन अस्थायी होते हैं और मनोविज्ञान में सीखने से तात्पर्य सिर्फ उन्हीं परिवर्तनों से होता है, जो अभ्यास या अनुभूति के फलस्वरूप स्थाई होते हैं।

मनोवैज्ञानिकों ने सीखने के संबंध में भिन्न-भिन्न परिभाषाओं का प्रतिपादन किया है, किंतु इन सारी परिभाषाओं का मूल तत्व लगभग समान है। सारटेन, नॉर्थ, स्ट्रेज तथा चैपमैन (Sartain North, Strange and Chapman ,1973) के अनुसार, "सीखना एक ऐसी प्रक्रिया है जिसके द्वारा अनुभूति या अभ्यास के फलस्वरूप व्यवहार में अपेक्षाकृत स्थाई परिवर्तन होता है।"

मॉर्गन, किंग, विस्ज तथा स्कॉपलर (MORGAN , KING, WEISZ ,SCHOLAR, 1986) के अनुसार,"अभ्यास या अनुभूति के परिणामस्वरूप व्यवहार में होने वाले अपेक्षाकृत स्थाई परिवर्तन को सीखना कहा जाता है।" हरगेनहान(HAGENHAN) के शब्दों में,"सीखना व्यवहार या व्यवहारात्मक अंतःशक्ति में अपेक्षाकृत स्थाई परिवर्तन है जो अनुभूति के कारण होता है और जिसे अस्थायी शारीरिक अवस्थाओं, जैसे वे अवस्थाएं जो बीमारी, थकान या औषधि लेने आदि से उत्पन्न होते हैं, के रूप में आरोपित नहीं किया जा सकता है।" 'सीखना' की उपरोक्त विवेचना एवं मनोवैज्ञानिकों द्वारा दी गई परिभाषाओं का विश्लेषण करने पर सीखने के संबंध में निम्नलिखित निष्कर्ष प्राप्त होते हैं-

1) सीखना व्यवहार में परिवर्तन को कहा जाता है(learning is the change in behaviour) -सीखने की प्रक्रिया में व्यक्ति के व्यवहार में परिवर्तन होता है, जो अच्छा एवं अनुकूली तथा खराब एवं कुसमंजित दोनों हो सकता है। अगर अभ्यास या अनुभूति के दौरान व्यक्ति के व्यवहार में परिवर्तन नहीं होता है तो उसे हम सीखना नहीं कह सकते। साइकिल चलाना सीखना, स्वेटर बुनना सीखना, खाना बनाना सीखना, इत्यादि व्यवहार में एक अच्छा एवं अनुकूली परिवर्तन का उदाहरण है; जबकि चोरी करना, झूठ बोलना, इत्यादि खराब एवं कुसमंजित परिवर्तन का उदाहरण है।

2) व्यवहार में परिवर्तन अभ्यास या अनुभूति के फलस्वरूप होता है(change in behaviour occurs as a function of practice or experience) -सीखने की प्रक्रिया में व्यवहार में जो परिवर्तन होता है, वह अभ्यास या अनुभूति के फलस्वरूप होता है। यहां अभ्यास से तात्पर्य किसी प्रकार के प्रशिक्षण या किसी प्रक्रिया को बार-बार दोहरा कर तथा अपनी गलतियों को सुधार कर सीखने से होता है। अनुभूति से तात्पर्य व्यक्ति के आकस्मिक अनुभूतियों एवं सूझ से होता है जो व्यक्ति के व्यवहार में परिवर्तन लाता है। जैसे एक व्यक्ति साइकिल चलाना सीखता है तो वह बार-बार गिरता है और अंत में वह इन गलतियों को सुधारते हुए साइकिल चलाना सीख जाता है, यह अभ्यास का उदाहरण है। बिजली के नंगे तार को नहीं छूना, गर्म तवा को नहीं छूना, इत्यादि अनुभूति के उदाहरण है।

3) व्यवहार में अपेक्षाकृत स्थाई परिवर्तन होता है (there is relatively permanent change in behaviour) -सीखने के तदोपरान्त व्यवहार में एक स्थाई परिवर्तन पाया जाता है। यह परिवर्तन कुछ दिनों से लेकर, महीनों, सालों और जीवन भर तक रह सकता है। जैसे गणित सीखना, साइकिल चलाना सीखना, भोजन बनाना सीखना, इत्यादि। अगर व्यवहार में हुआ परिवर्तन क्षणिक होता है अर्थात् कुछ समय के लिए होता है तो उसे सीखना ना कहके प्रेरणात्मक अवस्था कहा जाता है, जैसे-भूख, प्यास, काम, नींद, इत्यादि। जबकि खाने का तरीका, पानी पीने का ढंग, इत्यादि सीखना/अधिगम का उदाहरण है

स्पष्टतः सीखना प्राणी के व्यवहार में हुए परिवर्तन को कहते हैं जो किसी अभ्यास या अनुभूति के परिणामस्वरूप होता है।

सीखने की प्रक्रिया में अभिप्रेरणा का महत्व (role of motivation in learning)- सीखने की प्रक्रिया में अभिप्रेरणा का काफी महत्वपूर्ण स्थान है। मानव सीखना के साथ-साथ पशु सीखना में भी अभिप्रेरणा का विशेष महत्व है। अभिप्रेरणा की अवस्था मानव या पशु को सही अनुक्रिया करने के लिए एक तरह का आंतरिक बल प्रदान करता है। अभिप्रेरण से सीखने की प्रक्रिया तीव्र गति से होती है। मनोवैज्ञानिकों ने पशु सीखना में मूलतः जैविक अभिप्रेरकों, जैसे- भूख, प्यास, काम, नींद, आदि कारकों के प्रभाव को अधिक महत्वपूर्ण बतलाया है, क्योंकि ऐसे ही अभिप्रेरक के कारण वे किसी अनुक्रिया को सीखते हैं। जहां तक मानव सीखना में अभिप्रेरक के स्थान का महत्व है, तो हम देखते हैं कि पशु के समान मनुष्य के सीखने में जैविक अभिप्रेरकों का हाथ तो है परंतु उनकी अपेक्षा अर्जित अभिप्रेरकों का महत्व काफी अधिक है। पैसा कमाना, समाज में इज्जत पाने की इच्छा, प्रशंसा किए जाने की इच्छा, प्रतिस्पर्धा करना, ऊंचा से ऊंचा पद पाना, इत्यादि कुछ महत्वपूर्ण अर्जित अभिप्रेरक हैं। साथ ही किसी क्षेत्र में पारंगत होना, विशेष प्रशिक्षण लेना, इत्यादि सीखना, अर्जित अभिप्रेरकों के कारण ही होता है। मानव सीखना में जैविक अभिप्रेरकों का स्थान गौण होता है, यहां सामाजिक अभिप्रेरकों का स्थान प्रधान होता है। भिन्न-भिन्न प्रयोगों के परिणाम से यह स्पष्ट हुआ है कि सीखने की प्रक्रिया पशुओं में जैविक तथा मानव में अर्जित या सामाजिक अभिप्रेरकों से प्रभावित होती है।

23/07/2020.

- Sanjay Kumar